तकनीकी पत्रिका क्र. 36

उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागों में प्याज की व्यावसायिक खेती का विस्तार: एक सफलता की कहानी

भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय
राजगुरूनगर–410 505, पुणे, महाराष्ट्र, भारत

भाकृअनुप
ICAR

प्या ल अनु नि
DOGR

उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागों में प्याज की व्यावसायिक खेती का विस्तार: एक सफलता की कहानी

प्याज एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक फसल है जो छोटे और सीमांत किसानों की आजीविका में सुधार कर सकता है। यह खाद्य और पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, पुणे ने भारत में प्याज और लहसुन की खेती में सुधार के लिए दस प्याज की किस्मों और दो लहसुन की किस्मों के साथ–साथ उत्पादन, संरक्षण और फसल कटाई उपरांत तकनीक विकसित की है। इन उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने से किसानों को प्याज की उत्पादकता में वृद्धि और कृषि आय में सुधार हो रहा है। भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय ने कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), गैर सरकारी संगठन, किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) और भाकृअनुप के संस्थानों के सहयोग से देश के विभिन्न हिस्सों में प्याज की उन्नत किस्मों और उत्पादन प्रौद्योगिकियों के साथ विस्तार कार्य कर रहा है जिसमें आदिवासी उपयोजना (टीएसपी), अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) और संस्थान की गतिविधियों के साथ प्याज और लहसुन की व्यावसायिक खेती के माध्यम से किसानों की आजीविका में सुधार हो रहा है।

मिर्जापुर के बारे में

मिर्जापुर जिला उत्तर प्रदेश के दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित है। कुल 4,50,169 हेक्टेयर क्षेत्र और 20 लाख से अधिक आबादी के साथ, जिले को 4 उप–प्रभाग, 12 ब्लॉक और 1698 गांवों में विभाजित किया गया है। कृषि–जलवायु के अनुसार जिला दो क्षेत्रों में बाटा गया है जिसमें इंडो–गैंगेटिक के मैदानी भाग का कुल क्षेत्र 30–40% और शेष विंध्य क्षेत्र हैं। गंगा के मैदानी क्षेत्र समृद्ध जलोढ़ और उपजाऊ मिट्टी और अच्छी सिंचाई सुविधाओं से संपन्न है जबकि विंध्य क्षेत्र में जल का अल्प संसाधन है और भूमि अधिकतर क्षीण है। इस क्षेत्र का अधिकांश भाग धान–गेहूं की फसल चक्र अपनाते है जबकि सब्जियों सहित अन्य प्रमुख फसलें भी उगाई जाती हैं। यहाँ की जलवायु अर्ध–शुष्क है और 978 मिमी वार्षिक वर्षा होती है। इसमें से 85–90% वर्षा मानसून के दौरान (जून के 4वें सप्ताह से सितम्बर तक) प्राप्त होती है जबकि शेष मानसून के बाद असमय बारिश और सर्दियों की बारिश होती है।

हालांकि, उत्तर प्रदेश के दक्षिण–पूर्वी हिस्सा विशेष रूप से मिर्जापुर में व्यावसायिक स्तर पर प्याज उत्पादन के लिए उपयुक्त जलवायु की स्थिति है जबकि प्याज की खेती छोटे स्तर पर ज्यादातर घरेलू बागवानी तक तथा केवल रबी मौसम तक ही सीमित थी। मिर्जापुर में व्यावसायिक स्तर पर खरीफ प्याज उत्पादन की जबरदस्त गुंजाइश है तथा प्याज उत्पादन, अन्य पारंपरिक रूप से उगाई जाने वाली सब्जियों की तुलना में अधिक लाभप्रद सिद्ध हो रहा है। मिर्जापुर जिला के किसान आमतौर पर प्याज की स्थानीय किस्मों की खेती करते हैं जिनकी उत्पादकता कम होती है। चुंकि इन स्थानीय किस्मों के प्याज के कंद की गुणवत्ता कम होती है जिससे किसानों को कम लाभ मिलता है। इसलिए उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय ने उन्नत प्याज किस्मों और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने का निर्णय लिया।

खरीफ प्याज उत्पादन का महत्व

देशभर में नवंबर से फरवरी तक प्याज की मांग और आपूर्ति के महत्वपूर्ण अंतर को मिटाने में खरीफ प्याज की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है उस समय जब प्याज की कीमत एक स्तर तक बढ़ जाती है और खाद्य आपूर्ति के लिए एक गंभीर चिंता का विषय बन जाता है। लगभग 50–60% प्याज रबी, 20–25% खरीफ और 20–25% पछेती खरीफ मौसम से आता है। खरीफ प्याज मुख्य रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, हरियाणा, बिहार एवं तमिलनाडु में उगाया जाता है। खरीफ प्याज का उत्पादन अनियमित मानसून, बूंदा–बांदी और लगातार बादल छाए रहने के कारण फसल कमजोर होती है, जो पत्तों की बीमारियों के साथ–साथ मिट्टी जनित बीमारियों को भी बढ़ाता है। यदि मानसून के कारण खरीफ की फसल उत्पादन में देरी या खराब हो जाती है तो अक्टूबर में प्याज का बाज़ार मूल्य बहुत तेजी से बढ़ता हैं और जनवरी–फरवरी तक मूल्य अधिक बना रहता हैं। इसलिए बाजार की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए खरीफ प्याज की फसल सबसे महत्वपूर्ण है। प्रत्यारोपण के माध्यम से खरीफ प्याज की उत्पादकता बढ़ाने के लिए भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय ने उन्नत प्रजातियां जैसे भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड, भीमा रेड, भीमा राज, भीमा शुभ्रा और भीमा सफेद के साथ–साथ खरीफ प्याज उत्पादन प्रौद्योगिकी भी विकसित की है जो उत्पादकता बढ़ाने में मदद कर रही हैं।

प्याज की वर्ष भर की आपूर्ति सुनिश्चित करने और मूल्य अस्थिरता को कम करने के लिए गैर–पारंपरिक क्षेत्रों में खरीफ मौसम के दौरान क्षेत्र को बढ़ाने पर जोर दिया जाना चाहिए। क्योंकि गैर–पारंपारिक क्षेत्रों जिसमें दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र एवं उत्तर–पूर्वी राज्य शामिल है, उनमें प्याज उगाने की व्यापकता संभावनाएं हैं इसलिए इसे प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। यह उपाय मौसम संबंधी विकारों और फसल की विफलता के खिलाफ रक्षा प्रदान करता है। इसके अलावा, जलवायु, कीट और बीमारियों की अनिश्चितायों के खिलाफ फसल की सुरक्षा करना सर्वोच्च प्राथमिकता है। अतः मिर्जापुर खरीफ प्याज उत्पादन के लिए बहुत ही उपयुक्त पाया गया है।

सर्वेक्षण, जागरूकता और प्रशिक्षण

भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय ने सेवा इंटरनेशनल, काशी और गौतम कल्लू रिसर्च एंड डेवलपमेंट फाउंडेशन, वाराणसी के साथ 2017 में सर्वेक्षण, जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं खेती और बीज उत्पादन के लिए प्याज और लहसुन के बीज वितरण द्वारा कृषक समुदाय को सहयोग शुरू किया गया। भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय ने वर्ष 2019 में उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागों में प्याज और लहसुन की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने के लिए एग्रीमित्र फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, मिर्जापुर के साथ सहयोग बनाया।

खरीफ के साथ–साथ रबी के क्षेत्र और उत्पादन में सुधार के लिए योजनाबध्द प्रयास किए गए ताकि उन्नत किस्मों के सावधानीपूर्वक उपयोग और उत्पादन तकनीकों की सिफारिशों का पालन किया जा सके। किसानों के खेतों में बेहतर प्रौद्योगिकियों के साथ प्रक्षेत्र प्रदर्शनों का आयोजन किया गया जिसमें बेहतर किस्में, ज्ञान का प्रसार, क्षमता का निर्माण और उद्यमिता विकास शामिल है।

प्रारंभ में भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय ने सेवा इंटरनेशनल, काशी और गौतम कल्लू रिसर्च एंड डेवलपमेंट फाउंडेशन वाराणसी के सहयोग से प्रगतिशील किसानों के साथ कुछ बैठकें आयोजित की। डॉ. मेजर सिंह, निदेशक, भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय की अध्यक्षता में 12 दिसंबर, 2017 को प्याज जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया जिससे किसानों में जागरूकता एवं ज्ञान के स्तर को बढ़ावा मिला और मिर्जापुर के साथ–साथ वाराणसी, गाजीपुर, बलिया और अन्य आस–पास के क्षेत्रों में प्याज उत्पादन की नई तकनीकों को अपनाया गया।

किसानों को प्याज की अधिक उपज देने वाली किस्मों, बेहतर उत्पादन और कटाई के बाद की तकनीकों के बारे में जागरूकता की कमी के कारण मिर्जापुर, वाराणसी, गाजीपुर और बलिया के ज्यादातर क्षेत्रों में प्याज की खेती का उस समय तक व्यावसायीकरण नहीं किया गया था इसलिए कुल छह प्रशिक्षण अलग–अलग विषयों पर आयोजित किए गए जैसे प्याज जागरूकता शिविर, प्याज नर्सरी प्रबंधन, प्याज की उन्नत खेती, खरीफ प्याज उत्पादन तकनीकी, सेट्स प्रौद्योगिकी के माध्यम से अगेती खरीफ प्याज उत्पादन और प्याज की गुणवत्तायुक्त बीजोत्पादन ताकि किसानों में जागरूकता पैदा की जा सके और प्याज की उन्नत खेती की जाए (तालिका 1)। इन प्रशिक्षणों में चुनार तहसील, मिर्जापुर (उ.प्र.) के 26 गाँवों से लगभग 330 किसानों ने भाग लिया जिसमें गंगपुर, बगही, जलालपुर, सहसपुरा, प्रतापपुर, केशवपुर, धरमपुर, कैलाहाट, शिवाजीपुरम, नकहरा, शिवराजपुर और गोविंदपुर शामिल है ।

तालिका 1. उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिला में आयोजित प्रशिक्षण–सह–जागरूकता कार्यक्रम

दिनांक	प्रशिक्षण के विषय	प्रशिक्षण के लाभार्थी
12 दिसंबर, 2017	प्याज जागरूकता शिविर	50
2 जून, 2018	खरीफ प्याज उत्पादन तकनीकी	50
10 मार्च, 2019	खरीफ प्याज उत्पादन तकनीकी	40
10 जून, 2019	सेट्स प्रौद्योगिकी के माध्यम से अगेती खरीफ प्याज उत्पादन	60
23 नवंबर, 2019	प्याज की उन्नत खेती	60
17 अक्टूबर, 2020	प्याज की गुणवत्तायुक्त बीजोत्पादन	70

प्याज जागरूकता शिविर
(12 दिसंबर, 2017)

खरीफ प्याज उत्पादन तकनीकी
पर प्रशिक्षण (2 जून, 2018)

खरीफ प्याज उत्पादन तकनीकी पर
प्रशिक्षण (10 मार्च, 2019)

सेट्स के माध्यम से अगेती खरीफ उत्पादन
के लिए प्रशिक्षण (10 जून, 2019)

प्याज की उन्नत खेती पर
प्रशिक्षण (23 नवंबर, 2019)

प्याज की गुणवत्तायुक्त बीजोत्पादन पर
प्रशिक्षण (17 अक्टूबर, 2020)

प्रक्षेत्र प्रदर्शन और परिणाम

प्रक्षेत्र प्रदर्शन किसानों के बीच कृषि नवाचारों और अन्य व्यावहारिक जानकारी के प्रसार और उसे अपनाने के लिए प्रभावी साधन हैं। जो 'देखकर विश्वास करना' के सिद्धांत पर आधारित हैं। इस प्रकार अनुशंसित उत्पादन तकनीकों एवं उन्नत किस्मों का प्याज की खेती पर प्रदर्शन, विशेष रूप से मिर्जापुर के चयनित क्षेत्र में किया गया।

मिर्जापुर जिले में खरीफ और रबी मौसम में प्याज की खेती पर कुल 305 प्रक्षेत्र प्रदर्शन किए गए (तालिका 2)। लगभग 300 प्रगतिशील किसानों का चयन 26 गाँवों से किया गया जिसमें चुनार तहसील जिला मिर्जापुर (उ.प्र.) के बघेरी, रामरायणपुर, यमतापुर खुर्द, चंदापुर, भवानीपुर, गंगपुर, धरमपुर, गोविंदपुर, रामजीपुर, प्रतापपुर, परसोधा, बेला, बगही, फतेहपुर, कैलाहाट, दरबान, चिलरहा, बरौलिया, शिवराजपुर, दिक्षितपुर, केशवपुर, जलालपुर माफी, नकराहा, रायपुरिया, सहसपुरा एवं शिवाजीपुरम गाँव शामिल है। पहली बार, मिर्जापुर के चुनार तहसील में व्यावसायिक स्तर पर खरीफ प्याज का उत्पादन शुरू किया गया। प्याज की नई उन्नत किस्मों और बेहतर उत्पादन प्रौद्योगिकियों पर कुल 225 प्रदर्शन खरीफ 2018–19 से 2020–21 के दौरान किए गए। इसी तरह, रबी प्याज की खेती में 80 प्रदर्शन किए गए।

तालिका 2. उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिला में प्याज की खेती पर प्रक्षेत्र प्रदर्शन

साल और मौसम	गतिविधियां	किस्में	प्रदर्शन की संख्या	वितरण बीज (किलो)	लाभार्थियों की संख्या
2018–19 (खरीफ)	खरीफ प्याज की खेती	भीमा सुपर और भीमा डार्क रेड	20	40*	20
2018–19 (रबी)	रबी प्याज की खेती	भीमा शक्ति	20	40	20
2019–20 (खरीफ)	खरीफ प्याज की खेती	भीमा सुपर और भीमा डार्क रेड	50	100**	50
	सेट्स के माध्यम से अगेती खरीफ प्याज उत्पादन	भीमा डार्क रेड	20	250	20
2019–20 (रबी)	रबी प्याज की खेती	भीमा किरन	30	60	30
2020–21 (खरीफ)	खरीफ प्याज की खेती	भीमा सुपर	135	250	135
2020–21 (रबी)	रबी प्याज की खेती	भीमा शक्ति	27	50	27
	प्याज की गुणवत्तायुक्त बीजोत्पादन	भीमा शक्ति	3	400	3

* प्रत्येक किस्म का 20 किलोग्राम, ** प्रत्येक किस्म का 50 किलोग्राम

खरीफ मौसम के दौरान प्रक्षेत्र प्रदर्शन

खरीफ 2019–20 के दौरान, खरीफ प्याज उत्पादन पर 50 प्रक्षेत्र प्रदर्शन लगाये गए। अत्यधिक बारिश और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद किसानों को उनकी उम्मीदों से अधिक आय हुई। सेट्स के माध्यम से शुरुआती खरीफ प्याज अच्छे रहे लेकिन भारी बारिश के कारण कुछ प्रदर्शन विफल हो गए। खरीफ 2018–19 के दौरान भीमा सुपर और भीमा डार्क रेड किस्मों से किसानों ने 80–100 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन कर 0.70–0.80 लाख रुपये प्रति एकड़ की शुद्ध आय अर्जित की। जबकि खरीफ 2019–20 के दौरान लगभग 70–80 क्विंटल प्रति एकड़ प्याज उत्पादन कर भीमा सुपर और भीमा डार्क रेड से 2.0–2.5 लाख रुपये प्रति एकड़ का शुध्द मुनाफा हुआ (तालिका 3)।

तालिका 3. खरीफ 2019–20 के दौरान चयनित किसानों द्वारा प्याज उत्पादन का प्रक्षेत्र प्रदर्शन

किसान का नाम	प्याज की किस्में	उपज/एकड़ (क्विंटल)	बेचे जाने वाले प्याज के कंद की दर (रु/किग्रा)	लाभ (रु/एकड़
श्री संतोष कुमार सिंह गाँव–जलालपुर माफी, चुनार, मिर्जापुर (उ.प्र.)	भीमा डार्क रेड	48.57	56.7	2,55,238/–
श्री मनोज कुमार सिंह गाँव–जलालपुर माफी, चुनार, मिर्जापुर (उ.प्र.)	भीमा डार्क रेड	50.79	44.0	2,03,587/–
श्री वीरेन्द्र कुमार गाँव–जलालपुर माफी, चुनार, मिर्जापुर (उ.प्र.)	भीमा डार्क रेड	87.30	57.3	4,80,325/–
श्री दिलीप कुमार सिंह गाँव–जलालपुर माफी, चुनार, मिर्जापुर (उ.प्र.)	भीमा डार्क रेड	93.60	36.0	3,07,270/–
श्रीमती गीता देवी गाँव–बगही, चुनार, मिर्ज़ापुर (उ.प्र.)	भीमा सुपर	59.37	58.5	3,27,111/–

चयनित गांवों के अधिकांश किसानों ने व्यावसायिक स्तर पर प्याज की फसल उगाना शुरू कर दिया है क्योंकि उन्होंने प्रक्षेत्र प्रदर्शन के माध्यम से चयनित किसानों द्वारा प्राप्त लाभ को देखा है। उन्होंने खरीफ प्याज

के लिए अपनी पारंपरिक फसल मूंगफली को बदलकर उसमें प्याज की खेती करना शुरु कर दिये हैं। पहले यह किसान मूंगफली का उत्पादन कर रहे थे, जिसकी उपज प्रति एकड़ 9 क्विंटल तक थी और इसकी कीमत 32–35 रुपये प्रति किलो थी। अतः इस प्रकार वे 21,000 रुपये प्रति एकड़ का अधिकतम लाभ प्राप्त करते थे। किसानों की राय के अनुसार, खरीफ प्याज पारंपारिक रूप से उगाए गए मूंगफली की तुलना में 3 से 4 गुना अधिक लाभदायक है। प्याज की पैदावार में भारी कमी और अनियमित बारिश से खरीफ मौसम के दौरान खेतों में पानी जमाव से नुकसान होने के कारण बाजार में प्याज की कीमतों में बढ़ोत्तरी हुई, फिर भी हमारे प्याज के किसानों को खरीफ प्याज की खेती से अप्रत्याशित आय प्राप्त हुई। किसानों ने अपना प्याज 40–60 रुपये प्रति किलो के भाव से बेचा और उससे 4.80 लाख रुपये प्रति एकड़ तक का शुध्द मुनाफा कमाया।

खरीफ 2019–20 में जलालपुर माफ़ी, चुनार, मिर्जापुर (उ.प्र.) के श्री वीरेन्द्र कुमार ने भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय के विकसित तकनीकों को अपनाकर प्याज की फसल उगाई और 87 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन लेकर उन्होंने 4.80 लाख रुपये प्रति एकड़ की शुद्ध आय अर्जित की। उन्होंने प्याज के कंद को खेत से ही 57 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बेच दिए। जबकि बगही, चुनार, मिर्जापुर (उ.प्र.) से एक महिला किसान श्रीमती गीता देवी ने भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय की सिफारिशों का पालन करते हुए 59 क्विंटल प्रति एकड़ प्याज के कंद का उत्पादन लिया जिससे 3.27 लाख रूपये की शुद्ध आय हुई और उनके प्याज 58 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बिक गए।

किसानों के खेतों में खरीफ प्याज की फसल का प्रदर्शन (2019–20)

रबी मौसम के दौरान प्रदर्शन

मिर्ज़ापुर (उ.प्र.) में रबी 2018–19 से 2020–21 के दौरान उन्नत उत्पादन तकनीकों के साथ नई किस्में भीमा शक्ति और भीमा किरन की प्याज की खेती पर कुल 80 प्रक्षेत्र प्रदर्शन किए गए। तीस प्रगतिशील किसानों (प्रत्येक गाँव से 6 किसान) को पाँच गाँवों से चुना गया। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के नारायणपुर ब्लॉक के गंगपुर, बगही, जलालपुर, गोविंदपुर और सहसपुरा में एग्रीमित्र फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, मिर्जापुर के सहयोग से पहली बार व्यावसायिक स्तर पर रबी प्याज उत्पादन शुरू किया गया।

किसानों ने कोविड–19 के दौरान राष्ट्रीय लॉकडाउन की स्थिति में भी भीमा किरन किस्म से 66–71 क्विंटल प्रति एकड़ प्याज कंद का उत्पादन लिया जिससे 41,000–51,000 रुपये की शुद्ध आय अर्जित की है। गोविंदपुर, चुनार, मिर्जापुर (उ.प्र.) के श्री शम्भू सहानी ने भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय के विकसित तकनीकों को अपनाकर प्याज की फसल उगाई और 71 क्विंटल प्रति एकड़ पैदावार मिली। उन्होंने स्थानीय बाजार में प्याज के कंद को 10 रुपये प्रति किलोग्राम से बेचे जिससे 51,000 रुपये प्रति एकड़ की शुद्ध आय मिली। जबकि गंगपुर, चुनार, मिर्जापुर (उ.प्र.) के एक अन्य किसान श्री अरविंद कुमार ने भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय की सिफारिशों का पालन करते हुए 66 क्विंटल प्रति एकड़ प्याज कंद का उत्पादन लिया जिससे 41,000 रूपये की शुद्ध आय अर्जित की। कोरोना वायरस महामारी के बावजुद भी राष्ट्रीय लॉकडाउन स्थिति में उनके प्याज के कंद 9 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बिक गए।

किसानों को अधिक लाभ प्राप्त हो सकता था यदि मार्च से मई 2020 के दौरान राष्ट्रीय लॉकडाउन नहीं लगा होता। हालांकि चयनित गांवों के अधिकांश किसानों ने व्यावसायिक पैमाने पर प्याज की फसल उगाना शुरू

कर दिया है क्योंकि उन्होंने प्रदर्शन क्षेत्रों में किसानों द्वारा प्राप्त लाभ को देखा है। प्रक्षेत्र प्रदर्शनों से निष्कर्ष निकलता है कि उत्तर प्रदेश का पूर्वी हिस्सा खरीफ और रबी प्याज उत्पादन दोनों के लिए उपयुक्त है।

किसानों के खेतों में रबी प्याज की फसल का प्रदर्शन (2019–20)
(मई 2020 के महीना में राष्ट्रीय लॉकडाउन की स्थिति के दौरान)

प्याज का क्षेत्र विस्तार

मिर्ज़ापुर के चयनित क्षेत्रों में 300 एकड़ में भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय द्वारा सफलतापूर्वक प्याज उत्पादन का प्रक्षेत्र प्रदर्शन किया गया जिसे मिर्ज़ापुर के राजगढ़ और शिखर ब्लॉक के साथ–साथ सोनभद्र, वाराणसी और चंदौली के आसपास के जिलों में भी बढ़ाया जा सकता है ताकि अक्टूबर से फरवरी के दौरान प्याज की आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

प्रौद्योगिकी का प्रभाव मूल्यांकन के लिए प्याज के उत्पादन, उत्पादकता और लाभप्रदता के साथ–साथ किसानों के ज्ञान में परिवर्तन का मूल्यांकन किया गया। भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय के हस्तक्षेप के बाद मिर्जापुर में प्याज के उत्पादन और उत्पादकता में क्रमशः 93% और 32% की वृद्धि हुई है जिसमें एग्रीमित्र फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, मिर्जापुर और गौतम कल्लू रिसर्च एंड डेवलपमेंट

फाउंडेशन, वाराणसी का सराहनीय सहयोग रहा। भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय के हस्तक्षेप के बाद मिर्जापुर जिले में प्याज की खेती का क्षेत्र 352 हेक्टेयर (2016–17) से बढ़कर 515 हेक्टेयर (2018–19) हो गया जबकि प्याज का उत्पादन 4887 टन (2016–17) से बढ़कर 9414 टन (2018–19) हो गया। प्याज की उत्पादकता 13.8 टन/ हेक्टेयर (2016–17) से बढ़कर 18.3 टन/ हेक्टेयर (2018–19) हो गई है (स्रोत: कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार)।

प्याज का इससे अधिक क्षेत्रों में विस्तार हुआ है जिसका डेटा अगले वर्ष में उपलब्ध होगा। उच्च लाभप्रदता के कारण क्षेत्र का अधिकांश विस्तार खरीफ मौसम में हुआ है। हालांकि पारंपरिक रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश में रबी प्याज अधिक लोकप्रिय था लेकिन भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय के प्रौद्योगिकी से खरीफ मौसम के तहत क्षेत्र का विस्तार किया गया है।

भविष्य में हस्तक्षेप की गुंजाइश

मिर्जापुर, वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र और उत्तर प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में खरीफ और रबी प्याज की खेती के लिए अच्छी गुंजाइश है। प्रदर्शनों से निष्कर्ष निकलता है कि उत्तर प्रदेश का पूर्वी हिस्सा खरीफ प्याज उत्पादन के लिए उपयुक्त है। अक्टूबर से नवंबर के महीनों के दौरान प्याज की कीमत में उतार–चढ़ाव के मुद्दे को हल करने के लिए देश के इन जगहों में प्याज उत्पादन तकनीकी का विस्तार करने के लिए निम्नलिखित निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है:

- खरीफ और रबी मौसम के लिए संभावित क्षेत्रों में प्रक्षेत्र प्रदर्शनों के माध्यम से बेहतर प्याज किस्मों को लोकप्रिय बनाना।
- किसानों और विस्तार अधिकारियों की क्षमता निर्माण करना।
- किसानों को उन्नत किस्मों के बीज की उपलब्धता एवं पहुंच सुनिश्चित करना।
- उन्नत प्याज प्रौद्योगिकियों को लोकप्रिय बनाने के लिए स्थानीय विस्तार कर्ताओं का समर्थन।
- प्याज की मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने के लिए किसान उत्पादक कंपनियों का गठन।

मिर्जापुर में किसान संगोष्टी का आयोजन

भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय ने गौतम कल्लू रिसर्च एंड डेवलपमेंट फाउंडेशन और एग्रीमित्र फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी के सहयोग से मिर्जापुर के नारायणपुर ब्लॉक के पुरुषोत्तमपुर में एक किसान संगोष्ठी का आयोजन 12 मार्च 2021 को किया। इस कार्यक्रम में मिर्जापुर, वाराणसी, सोनभद्र, आजमगढ़, बलिया और विंध्याचल के विभिन्न भागों से कुल 355 प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया जिसमें 212 महिलाएं शामिल थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. गौतम कल्लू, पूर्व उपमहानिदेशक (बागवानी), आईसीएआर और पूर्व कुलपति, जेएनकेवीवी, जबलपुर ने की। डॉ. मेजर सिंह, निदेशक, आईसीएआर–

डीओजीआर, पुणे; डॉ. जगदीश सिंह, निदेशक, आईसीएआर–आईआईवीआर, वाराणसी; डॉ. जगदीश राय, पूर्व कुलपति, इन्वर्टिस यूनिवर्सिटी, बरेली; श्री लाल बहादुर सिंह, निदेशक, एग्रीमित्र फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी मिर्जापुर और डॉ. ए. बी. राय, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख, आईसीएआर–आईआईवीआर, वाराणसी ने इस अवसर पर आभार व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि डॉ. गौतम कल्लू ने मिर्जापुर के किसानों की खाद्य सुरक्षा, पोषण, स्वास्थ्य, रोजगार और नई कृषि प्रौद्योगिकियों को अपनाने में अग्रणी भूमिका के लिए प्रशंसा की। डॉ.कल्लू ने देश में प्याज और लहसुन पर प्रौद्योगिकी विकास और हस्तांतरण में आईसीएआर–डीओजीआर के प्रयासों की सराहना की। इसके अलावा उन्होंने कहा कि भंडारण क्षमता के विकास और कटाई के बाद के नुकसान को कम करने पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। प्याज की कीमतों को स्थिर करना और किसानों की आय को दोगुना करना बड़ी चुनौतियां हैं लेकिन यह तब होगा जब किसान खरीफ प्याज की व्यावसायिक खेती को अपनाएंगे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. मेजर सिंह ने कहा कि इस क्षेत्र में खरीफ प्याज की खेती की अपार संभावनाएं हैं। डॉ. सिंह ने किसानों को आश्वासन दिया कि निदेशालय मिर्जापुर और अन्य उपयुक्त क्षेत्रों में प्याज की खेती के लिए सहयोग करता रहेगा।

डॉ. अमर जीत गुप्ता, प्रमुख वैज्ञानिक, आईसीएआर–डीओजीआर और किसान संगठन के समन्वयक ने प्याज की खेती की वर्तमान स्थिति के साथ–साथ खरीफ प्याज की व्यावसायिक खेती के माध्यम से किसानों की आजीविका सुरक्षा पर जोर दिया। डॉ. गुप्ता ने मिर्जापुर के चुनार तहसील में प्याज की खेती और उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए किसानों की सराहना की। आईसीएआर–डीओजीआर प्रौद्योगिकियों के हस्तक्षेप से मिर्जापुर में प्याज के उत्पादन और उत्पादकता में उल्लेखनीय रूप से क्रमशः 93% और 32% की वृद्धि हुई है जिसमें एग्रीमित्र और जीकेआरडीएफ का सराहनीय सहयोग रहा। डॉ. नागेंद्र राय, प्रमुख वैज्ञानिक, आईसीएआर–आईआईवीआर ने किसानों से सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति बढ़ाने के लिए किसान उत्पादक कंपनियों में संगठित होने की अपील की।

इस किसान संगोष्ठी कार्यक्रम में प्रगतिशील किसान श्रीमती गीता देवी, श्रीमती सावित्री देवी, श्री वीरेंद्र कुमार, श्री शम्भु नाथ एवं श्री अजय कुमार और सक्रिय कार्यकर्ता डॉ. गोविंद नारायण सिंह को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर गौतम कल्लू रिसर्च एंड डेवलपमेंट फाउंडेशन, वाराणसी द्वारा डॉ. अमर जीत गुप्ता, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) को प्याज अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'आउटस्टैंडिंग साइंटिस्ट अवार्ड–2020' से सम्मानित किया गया, जबकि डॉ. शैलेन्द्र एस. गाडगे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि प्रसार) को प्याज उत्पादन प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए 'आउटस्टैंडिंग साइंटिस्ट अवार्ड–2020' से सम्मानित किया गया।

मिर्जापुर में आईसीएआर–डीओजीआर द्वारा आयोजित तीन वर्षों के प्रदर्शन परीक्षणों के आधार पर यह पता चला कि मिर्जापुर का क्षेत्र खरीफ प्याज उत्पादन के लिए बहुत ही उपयुक्त है और रबी प्याज एवं अन्य पारंपरिक सब्जी उत्पादन की तुलना में खरीफ प्याज की खेती व्यावसायिक स्तर पर अधिक लाभप्रद है।

आईसीएआर–डीओजीआर द्वारा मिर्जापुर में किसान संगोष्ठी का आयोजन (12 मार्च, 2021)

मेजर सिंह, अमर जीत गुप्ता, एस.एस.गाडगे,
आर.बी.काले, नागेन्द्र राय और गोविंद नारायण सिंह

प्रकाशन वर्ष : 2021

भाकृअनुप
ICAR

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

प्या ल अनु नि
DOGR

भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय

राजगुरूनगर–410 505, पुणे, महाराष्ट्र, भारत

दूरभाष: 02135–222026, 222697 | फैक्स: 02135–224056

ईमेल: director.dogr@icar.gov.in | वेब: www.dogr.icar.gov.in